षष्ठम अध्याय

उपसंहार

मान मन्दिर – 'मृगनयनी'

षष्ठम अध्याय : उपसंहार

स्वर्गीय वृन्दावनलाल वर्मा अद्‌भुत ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। उनका विचार आदर्शवाद, रूढ़िमुक्त एवं प्रगतिशील था। उन्होंने अपने उपन्यासों में नैतिकता को उभारने का यथाशक्ति प्रयत्न किया और इतिहास को उसकी भूमि बनाया। उनके अधिकांश उपन्यास ऐतिहासिक हैं। वे इतिहास की भूमि पर आदर्श और नीति का पादप आरोपित करते हैं और प्रगतिशीलता का खाद देकर उसे पुष्ट करते हैं। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में वे नारी के आदर्श की प्रतिष्ठापना करते हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यास नायिकाप्रधान हैं।

उपन्यास आधुनिक काल में गद्य रूप में सर्वाधिक प्राणदायक साहित्यिक विधा है। उसके साथ–साथ यह सबसे अधिक लोकप्रिय भी है। साहित्यिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका महत्व अधिक है। मनुष्य की विविधतापूर्ण प्रकृति, उसके बुद्धि वैभव और भाव का अध्ययन उपन्यास के द्वारा व्यापक मात्रा में किया जाता है। मानव–जीवन के प्रत्येक रूप को प्रदर्शित करने की जितनी शक्ति उपन्यास में होती है, प्रायः उतनी अन्य विधा में नहीं मिलती। उपन्यास ही एकमात्र साहित्यिक माध्यम है जिसके द्वारा मानव–जीवन का चित्रण सरलता से किया जा सकता है।

साहित्य तथा नारी के, परस्पर संबंधों की अटूट श्रृंखला है। साहित्य कभी भी नारियों की उपेक्षा नहीं कर सका। प्रत्येक राष्ट्र और राष्ट्र के प्रत्येक साहित्य तथा प्रत्येक प्रगतिशील कलाकारों ने नारी की महत्ता स्वीकार की है। उनके दृष्टिकोण में विभिन्नता हो सकती है, पर इस दृष्टिभेद के कारण ही नारियाँ कभी

साहित्य में उपेक्षणीय नहीं रहीं। साहित्य समाज का दर्पण है और समाज की रचना नारी तथा पुरुषों के परस्पर योग से होती है। इसलिए साहित्य में नारियों का भी समान चित्रण होता है। अगर समग्र मानवीय इतिहास का अवलोकन करें तो यह तथ्य स्पष्ट होगा कि नारियाँ पुरुष वर्ग के साथ सदैव किसी न किसी रूप में रही हैं। वे पुरुषों से निकृष्ट नहीं हैं; इतना ही नहीं बल्कि वे पुरुषों की तुलना में भिन्न मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से संपन्न भी हैं। नारी का अस्तित्व उतना ही महान एवं महत्वपूर्ण होता है जितना पुरुषों का।

भारत के राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में नारियाँ बराबर भाग लेती रही हैं, रहती हैं और रहेंगी। स्वाधीनता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई, श्रीमती. एनीबेसेंट, दुर्गावती आदि असंख्य नारियों ने भाग लिया। औपन्यासिक नारी पात्रों में नायिका का प्रमुख स्थान रहता है। कथावस्तु के अनुसार नायिका का रूप भी होता है। उदाहरणार्थ वृंदावनलाल वर्मा के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'मृगनयनी' आदि के नाम ही इस बात के परिचायक हैं। वर्माजी ने 'मृगनयनी', 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' आदि में वर्णित पात्रों का वीरत्वपूर्ण ओजस्वी चित्र सफलता से अंकित किया है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में वृंदावनलाल वर्मा को श्रेष्ठ स्थान उपर्युक्त कृतियों के आधार पर दिया गया है। जहाँ एक ओर वर्माजी के उपन्यासों में ऐतिहासिकता की रक्षा हुई है वहीं दूसरी ओर साहित्य में भी पूर्ण निखार आ सका है। वे दोनों एक दूसरे के लिए व्यवधान नहीं बन सके और इन दोनों के समुचित संतुलन और विन्यास की सफलता ने उन्हें गौरवपूर्ण पद पर अधिष्ठित किया है। जिज्ञासा, रोचकता, पात्रों का सफल मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक रूप, कौशल, संभवता आदि औपन्यासिक तत्व भी इतनी सुंदरता से संजोए गए हैं कि वर्माजी के नैपुण्य और दक्षता के प्रति

पूरी आस्था उत्पन्न हो जाती है। साहित्य और इतिहास का अपूर्व संयोजन तथा संकल्प इनकी कला की विशिष्टता है।

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास का संबंध 1857 ई. के विद्रोह से है। उस समय तक भारत का अधिकतर भाग ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में आ चुका था। 'फूट डालो और राज्य करो' की अँग्रेज़ी नीति लार्ड़ डल्हौज़ी द्वारा पूर्णतया सफल हो रही थी। उनके पास अब शक्ति थी। उसने निस्संतान राजाओं द्वारा, पुत्र गोद लिए जाने के अधिकार को न मानकर, झाँसी को अपने राज्य में मिला लिया और भी अनेक जघन्य अपराध अँग्रेज़ों के द्वारा किये जा रहे थे। लोगों को यह असह्य हो उठा और अँग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध छिड़ गया।

इसी राजनैतिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत उपन्यास की रचना हुई। वर्माजी ने इस उपन्यास को चार भागों में विभक्त किया है। 'प्रस्तावना' में बताया गया है कि झाँसी की गद्दी के अनेक दावेदारों में अँग्रेज़ों ने गंगाधरराव का साथ दिया। 'उदय' में गंगाधरराव का मोरोपंत की पुत्री मनू (लक्ष्मीबाई) से विवाह, उनके तीन महीने पुत्र की मृत्यु; आनंदराव को दामोदरराव के नाम से गोद लेना परन्तु डल्हौज़ी द्वारा उसको अमान्य कर झाँसी को अँग्रेज़ी राज्य में मिल लेना तथा लक्ष्मीबाई द्वारा विद्रोह की तैयारी का वर्णन है। 'मध्यान्ह' में वर्माजी ने विद्रोह के अन्य कारणों पर प्रकाश डाला है। 'अस्त' में जनरल रोज द्वारा झाँसी पर आक्रमण, पीरअली तथा दूल्हाजू की गद्दारी के कारण झाँसी का पतन, रानी का कालपी पहुँचना, कालपी पर अँग्रेज़ों का अधिकार, रानी का ग्वालियर पर कब्जा परंतु किले के बाहर लड़ते हुए वीरगति प्राप्त करना आदि का वर्णन है।

'मृगनयनी' उपन्यास का संबंध पंद्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी के संधि–युग से है। उस समय भारत किसी एक शक्ति के अधीन नहीं था। ग्वालियर का

राजा मानसिंह बड़ा ही वीर और कला–प्रेमी था, जबकि मालवा का सुल्तान गयासुद्दीन, दिल्ली का सुल्तान सिकंदर तथा गुजरात का महमूद बघर्रा बड़े ही विलासी थे। गयासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन का पंद्रह हज़ार सुंदरियों से अपने हरम को भरना, वासना की पराकाष्ठा है। वास्तव में राजनीतिक दृष्टिकोण से यह अंधा युग था। छोटे–छोटे राज्य कीड़े–मकोड़ों की भाँति बिलबिला रहे थे। साधारण जनता बड़ी दुखी थी।

प्रस्तुत उपन्यास इसी पृष्ठभूमि पर आधारित है। उपन्यास की नायिका राई गाँव की निन्नी (अहीर) तथा उसकी सहेली लाखी (गूजर) की सुंदरता और लक्ष्यभेद की प्रशंसा चारों ओर फैल जाती है। राजा मानसिंह राई जाकर उनकी वीरता का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करता है और निन्नी (मृगनयनी) से विवाह कर लेता है। मृगनयनी का भाई अटल लाखी के साथ विवाह कर लेता है परंतु गाँववाले इस विजायती विवाह से अप्रसन्न हो जाते हैं। अतः अपने को असुरक्षित समझकर वे दोनों नरवरगढ़ के किले में चले जाते हैं। लाखी नटों के षडयंत्र को विफल कर दुर्ग पर गयासुद्दीन का अधिकार होने नहीं देती। मानसिंह प्रसन्न होकर नरवरगढ़ की जागीर अटल को देता है और उन दोनों को ग्वालियर ले जाता है। सिकंदर मानसिंह पर आक्रमण करता है। अटल तथा लाखी राई गढ़ी की, वीरता से रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करते हैं। सिकंदर नरवरगढ़ पर अधिकार कर लेता है और सब कलाकृतियाँ तथा मूर्तियाँ नष्ट कर वहाँ की जागीर राजसिंह को सौंपकर चला जाता है। कला में प्रवीण मृगनयनी कर्तव्य में भी पीछे नहीं रहती। अपने पुत्रों की अपेक्षा बड़ी रानी के पुत्र को गद्दी दिलाकर अपना कर्तव्य पूरा करती है।

रानी लक्ष्मीबाई नारी सशक्तीकरण का अद्‌भुत उदाहरण है। उनके जीवन से आधुनिक भारतीय नारी को नैतिक और मानसिक बल मिलता है। रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के तमाम पहलुओं को, यदि पूरी तरह नहीं तो भी, कुछ हद तक वर्तमान पीढ़ी के युवाओं को अपने जीवन में उतारने की कोशिश ज़रूर करनी चाहिए। रानी लक्ष्मीबाई का जीवन काल यद्यपि छोटा रहा, लेकिन वह आज भी हमें प्रेरणा देता है और आगे आनेवाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देता रहेगा। निस्संदेह **'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।'**

रानी लक्ष्मीबाई को आज भी आदर और श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। देश की प्रेरणा और महत्वाकांक्षा, आशाओं और आशंकाओं तथा अनुराग और विद्वेष का वे मूर्तमत स्वरूप थीं। यों तो वे भी सैनिक बगावत के तमाम नेताओं में से एक थीं, लेकिन यह उनके पराक्रम और शौर्य का ही परिणाम था कि एक अर्द्ध सैनिक और अर्द्ध–सामंती बगावत भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बदल गयी। वे भी अपने वर्ग और वय की अन्य नारियों के समान थीं और उनका उद्देश्य अपने राज्य पर संप्रभुता संपन्न अधिकार प्राप्त करने तक सीमित था; लेकिन इस उद्देश्य को उन्होंने मिशन बना दिया था और इस मिशन की एक ही प्रेरणा थी–देशभक्ति। उन्होंने अपने मिशन को 'अँग्रेज़ों के खिलाफ संघर्ष' घोषित किया था। बगावत के किसी भी अन्य नेता से कहीं अधिक उन्होंने भविष्य के एक स्वतंत्र भारत का सपना देखा था। अवश्य ही उनके अदम्य साहस ने हज़ारों अन्य लोगों को भी भारत की स्वतंत्रता के लिए प्राणपण से उठ खड़े होने के लिए प्रेरित किया। भारत के महान दार्शनिक अरविंद घोष के शब्दों में – ''किसी रचनाकार और महान कार्यकर्ता को सिर्फ उसके द्वारा किए गए कार्य से ही नहीं आँकना चाहिए बल्कि उस बड़े कार्य को भी ध्यान में रखना चाहिए जो उनके कारण संभव हो सके।' इस मानदंड के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई इतिहास के तमाम् महान व्यक्तियों में उच्च स्थान प्राप्त

करने की हकदार हैं। निःसंदेह रानी लक्ष्मीबाई राष्ट्रवादिता की एक महान प्रतीक है।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ने कहा है –

''नारी तुम धन्य हो
घर है, घर का काम धन्धा भी
देवता के पूजा के योग्य तुम्हारी सेवा है, मूल्यवान
विश्व की पालनी शक्ति की
धारिका हो तुम शक्तिमती
माधुरी के रूप में
सृष्टि विधान का
लिया है कार्य भार
हो तुम नारी
उनकी निज सहकारी।''

मृगनयनी के उपन्यास में मृगनयनी भी सौंदर्य में अतुल, बल में विपुल, हास–परिहास में कभी न थकनेवाली एवं अकुंठित व्यक्तित्व के साथ नज़र आती है। पारिवारिक ममत्व, दाम्पत्य अनुराग, प्रतिभा संपन्न, अप्रतिम त्याग, नारीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व तीनों का सामंजस्य ही मृगनयनी है। इस तरह कहा जा सकता है कि 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' और 'मृगनयनी' दोनों नायिकाओं में प्रेम, बड़प्पन, करुणा, दयालुता जैसे मानव मूल्य के सभी उत्तम गुण विद्यमान हैं। मात्र दोनों के कार्य करने की रीति में ही भिन्नता दिखाई देती है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जन्म से ही राजपरिवार के परिप्रेक्ष्य में रहती है मगर मृगनयनी साधारण कृषि बालिका है। गाँव में पली–बड़ी, शिकार करने की आदी है। जन्म से,

लालन–पालन से इनमें भिन्नता है। फिर भी देश प्रेम, देशभक्ति आदि बातों में इनमें समानता दिखायी देती है।

"कितने भी गहरे रहे गर्त
हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट जमाना हो
हर समय प्यार भा सकता है।"

सचमुच 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' दोनों ही प्रेम रूपी अस्त्र का प्रयोग करके परिवार, समाज एवं राजनीति में संतुलन बनाए रखती हैं।

भारतीय संस्कृति के मध्य नारी का जो शाश्वत सौंदर्य है और जो हमारे संस्कारों में बसा हुआ है वर्माजी ने उसी को अपनी लेखनी से स्पर्श करके 'मृगनयनी' उपन्यास के द्वारा जगाया है। 'मृगनयनी' का ग्रामीण बाला रूप भी प्रकृति और ग्रामीण संस्कृति के उपादानों के मध्य शौर्य और सुंदरता के अद्‌भुत सम्मिश्रण के संयोजन का प्रतिफल है।

"धन गया तो कुछ नहीं गया
सेहत गयी तो कुछ खो गया
मगर चरित्र गया तो सब कुछ गया।"

वर्माजी के नारी पात्रों में ऐसी कोई नायिका नहीं आई है जो चरित्रहीन हो, जिसका कार्य, वासना भड़काना और कामुकता जागृत करना हो, यद्यपि अधिकांश नायिकाएँ नव–यौवना वयः संधि वाली हैं। यथा लाखी, मृगनयनी, लक्ष्मीबाई, जूही आदि। 14–15 वर्ष की अवस्था से ही उनका चरित्र लिया गया है; किन्तु इनका किंचित वर्णन भी कामुकता भड़कानेवाला नहीं है।

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' की परिकल्पना का उद्देश्य भी इसी परिप्रेक्ष्य में, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था जागृत करके, राष्ट्रीयता के आदर्श, कर्तव्य एवं दायित्व तथा भारतीय नारी की मर्यादा की स्थापना करना रहा है। वहाँ भी 'निष्काम–कर्म' की अभिव्यक्ति हुई है। छल, अविश्वास, द्वेष, अत्याचार आदि भारतीय संस्कृति के विपरीत तत्वों का तिरस्कार किया गया है। अंतिम दम तक भारतीय संस्कृति के आदर्शों को निबाहते उनके पात्र, इनका सहारा नहीं लेते हैं – यद्यपि इसके कारण उन्हें जीवन का बलिदान तक देना पड़ता है।

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' और 'मृगनयनी' नायिकाओं के द्वारा इस शोध प्रबंध में यह बताने का प्रयास किया है कि नारी की शक्ति असीम है। नारी शक्तिस्वरूपिणी है। उदात्त चरित्रवाली, अपने आदर्शों के लिए सतत प्रयत्नशील, स्वाधिकार के प्रति सचेष्ट, राष्ट्र के नवनिर्माण में सक्रिय भाग लेनेवाली है। धार्मिक अंधविश्वास, जाति परिवर्तन, रूढ़िग्रस्त धारणा आदि अनेक समस्याओं का सामना कर अपने को सदैव उन्नति के पथ पर अग्रसर रखने में सतत प्रयत्नशील एवं कर्मठ है। भूत, वर्तमान और भविष्य में हमेशा नारी इसी रूप में देखी गयी है, देखी जाती है और देखी जायेगी। समाज में नारी के पाँच विविध रूप – माँ, पत्नी, बहन, बेटी और बहू अत्यंत विशिष्ट और अभूतपूर्व हैं। इस सृष्टि में नारी में ही ये पाँचों गुण एक साथ विद्यमान है। स्वभाव से नारी, ये पाँचों रूप सहजता एवं सरलता से निभाने में कुशल है जो आजकल नारियों में कम विद्यमान है।

पाश्चात्य संस्कृति की ओर अधिक लगाव, भारतीय संस्कृति की ओर हेय दृष्टि, आज के युवा वर्ग में यत्र–तत्र देखने को मिलती है। उनके सोचने की दृष्टि, व्यावहारिकता, चरित्र, आचार–विचार आदि में सुधार लाना इस शोध प्रबंध

का उद्देश्य है। मनुष्य में दूरदृष्टिकोण कम होता जा रहा है। पाश्चात्य सभ्यता की अंधी नकल कर रहा है और आराम को प्राथमिकता देकर स्थाई सुख से वंचित होता जा रहा है। मानव की इस कुंठित भावना से उसे उभारना ज़रूरी है।

आज हमारा देश प्रगति की ओर अग्रसर है, जिसमें नारियों का भी उतना ही उत्तरदायित्व है, जितना पुरुषों का। नारी किसी भी रूप में पुरुषों से कम नहीं है। ऐसी स्थिति में हमारा यह प्रथम एवं प्रमुख कर्तव्य हो जाता है कि नारियों में जिस सीमा तक नैतिकता का पतन हुआ है, उसके प्रति उन्हें सचेत कर उनमें जीवन की महिमा एवं गरिमा को स्थापित करने की प्रेरणा दे सकें। इस बात को इन उपन्यासों की नायिकाओं के चरित्र विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आज के समाज में पश्चिमी संस्कृति के बोलबाले के कारण भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य, संस्कार, बड़प्पन आदि बातों की ओर जनता के बीच जागरण कम होता नज़र आ रहा है। विशेषकर नारियों के मनोबल, मानसिक चिंतन, धैर्य, आत्मविश्वास, कार्यकुशलता – इन सभी बातों में परिवर्तन की ज़रूरत है। रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र बालिका मनू के रूप में, गंगाधरराव की धर्मपत्नी के रूप में, विधवा महिला के रूप में, कर्मठ रानी के रूप में, वीरांगना, नरचंडी दुर्गा के रूप में, कई समस्याओं का सामना करती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयन्तशील रहती है। इस दौरान किसी भी हालत में कहीं भी अपनी संस्कृति, आचार–व्यवहार से वह पिछड़ी नहीं रहती।

इसी प्रकार 'मृगनयनी' की नायिका भी कला और कर्तव्य का समन्वय करते हुए नज़र आती है और एक साधारण कृषि बालिका, ग्रामीण अनपढ़ नारी होते हुए

भी भविष्य में मानसिंह की रानी बनने के बाद अपने को सभी क्षेत्रों में सुयोग्य एवं प्रवीण बनाने हेतु अथक प्रयास करती रहती है और उसमें सफल भी होती है। इसी तरह वर्तमान समाज की नारियों को 'मृगनयनी' पात्र के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि हमें सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। कोई भी कला सीखने के लिए जीवन में आयु एक बाधा कभी नहीं हो सकती। किसी भी आयु में हम किसी भी कला में निपुणता हासिल कर सकते हैं। मात्र मन की इच्छा शक्ति और कड़ी मेहनत की ज़रूरत है। स्त्रियों में वह मनोबल अन्तःस्थल में छिपा रहता है जो समय आने पर उत्तेजित होकर ज्वालामुखी की तरह भभक उठता है। उसे बाहर लाने की प्रेरणा ऐसे उपन्यास की नायिकाएँ, सुलभता से देने में समर्थ है। इसीलिए ही यह एक ऐतिहासिक उपन्यास होने के बावजूद भी, आज भी इसका विशेष महत्व है।

अंत में इस शोध प्रबंध की प्रमुख उपलब्धियाँ तथा विशिष्टताओं को निम्नलिखित रूप में रेखांकित किया जा सकता है:–

वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' की नायिकाओं को लेकर व्यापक रूप में समीक्षित यह पहली रचना है। यद्यपि वर्माजी के उपन्यासों के औपन्यासिक पक्षों को लेकर इसके पहले शोध प्रबंध और समीक्षा ग्रंथ लिखे जा चुके हैं लेकिन वर्माजी की औपन्यासिक नायिकाओं के द्वारा उनकी राष्ट्रीय विशिष्टताओं का विवेचन 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों के आधार पर प्रस्तुत शोध प्रबंध में पहली बार किया गया है।

इसमें 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' नायिकाओं की परिकल्पना के संदर्भ में आज की नारियों की स्थितिगतियों तथा चित्तवृत्तियों का भी विश्लेषण किया गया है। ये औपन्यासिक नायिकाएँ अपने आदर्शों को नये सिरे से प्रस्तुत

करना चाहती हैं जिससे नारियों को सही दिशा प्राप्त हो सके और वे अपने अधिकारों के साथ–साथ अपने दायित्व के प्रति भी सामूहिक रूप से जुट जाएँ। यद्यपि वर्माजी के उपन्यासों में सशक्त पुरुष पात्र भी चित्रित हैं तथापि मैंने उनकी नायिकाओं को मात्र अपना केंद्रबिंदु बनाकर यह कार्य किया है, क्योंकि समाज को उन्नति के चरमोत्कर्ष तक ले जाने के लिए जितना पुरुष का उत्तरदायित्व है उससे कहीं कम स्त्रियों का नहीं है। नारी ही परिवार की धुरी है।

आगामी भविष्य में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'मृगनयनी' जैसे उपन्यासों को शिक्षा संस्थाओं में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत लाकर पढ़ाया जाना चाहिए जिससे समाज में हमारी भारतीय संस्कृति, संस्कार, मानव व नैतिक मूल्यों के प्रति जागरण हमेशा बना रहे। इन उपन्यासों का नाटक रूप प्रस्तुत कर बढ़ती पाश्चात्य संस्कृति के व्यवहार के कारण हमारे परंपरागत आचार–विचार, ललित कलाएँ, युद्ध नीति, बड़प्पन की बातें, पारिवारिक बंधन, आध्यात्मिक चिंतन आदि में जो धूमिल स्थिति वर्तमान समाज में दिखाई दे रही है उन्हें दूर कर नवजागरण लाया जाए।

'मृगनयनी' उपन्यास सन् 1990 में टेली सीरियल का रूप ले चुका है। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' आजकल टेली सीरियल के रूप में प्रसारित किया जा रहा है। दृश्य–श्रव्य प्रक्रिया द्वारा इन नायिकाओं के सच्चरित्र का गहरा असर सबके मन में एक अमिट छाप बनाए रखेगा। इसलिए इस प्रकार के धारावाहिकों को प्रोत्साहन किया जाना चाहिए। शिक्षा संस्थानों में नाटकों के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत इस प्रकार के विशिष्ट उपन्यासों के नाटकों के प्रदर्शन के लिए अधिक अवसर दिए जाए ताकि इन विशेष चरित्रों का प्रभाव आज के युवा वर्ग में अमिट बना रहे। विभिन्न स्तरों पर संगोष्ठियों का आयोजन, अनेक

साहित्यकारों, मानवीय मूल्यों, संस्कृति जैसे विषयों पर कर, प्रचार एवं प्रसार करने का प्रयास किया जाए।

वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नायक–नायिका परिकल्पना, उनके उपन्यासों के पात्रों में दर्शित मानवीय मूल्यों, उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त ललित कलाओं से संबंधित विषय एवं समस्याओं पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है।